श्री नर्मदा अष्टक | By Ravinder Sharma |

नमो नर्मदाये निजानंदाये
नमः शर्मदाये शमतर्पिताये
नमो वर्मदाये वर्णवेति राये
नमो हर्म्यदाये हरमगर्शिताये

सबिंदु सिन्धु सुस्खल तरंग भंग रंजितम।
द्विषत्सु पाप जात जात कारि वारि संयुतम॥
कृतान्त दूत काल भूत भीति हारी वर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

त्वदम्बु लीन दीन मीन दिव्य सम्प्रदायकम
कलौ मलौघ भारहारि सर्वतीर्थ नायकं॥
सुमसत्य कच्छ नक्र चक्र चक्रवाक शर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

महागभीर नीर पूर पाप धूत भूतलं।
ध्वनत समस्त पातकारि दरितापदाचलम्॥
जगल्लये महाभये मृकुण्डुसुनु हर्म्यदे।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा।
मृकुंडूसूनु शौनका सुरारी सेवी सर्वदा॥
पुनर्भवाब्धि जनमज भवाब्धि दुख वर्मदे ।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

अलक्ष लक्ष किन्न रामरासुरादि पूजितं।
सुलक्ष नीर तीर धीर पक्षी लक्ष कूजितम्॥
वसिष्ठ शिष्ट पिप्पलाद कर्दमादि शर्मदे।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

सनत्कुमार नाचिकेत कश्यपात्रि षटपदै :।
धृतं स्वकीय मानसेषु नारदादि षटपदैः॥
रविन्दु रन्ति देव देव राजकर्म शर्मदे।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

अलक्ष लक्ष लक्षपाप लक्ष सार सायुधं।
ततस्तु जीव जंतु तंतु भुक्ति मुक्ति दायकं॥
विरञ्चि विष्णु शंकरं स्वकीय धाम वर्मदे।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

अहो धृतं स्वनं श्रुतं महेशिकेश जातटे।
किरात सूत वाडवेषु पण्डिते शठे नटे॥
दुरन्त पाप ताप हारि सर्वजंतु शर्मदे।
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवी नर्मदे

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%a8%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a4%a6%e0%a4%be-

%e0%a4%85%e0%a4%b7%e0%a5%8d%e0%a4%9f%e0%a4%95-by-ravinder-sharma/